अक्रम यूथ

अप्रैल 2018 | हिन्दी

दादा भगवान परिवार

₹ 20

THE EFFECTS OF WORDS

शब्दों का असर

Dada's Youth Network

अनुक्रमणिका

4 संत कबीर

6 शब्दों के असर के पीछे का विज्ञान

8 AkrampediA

10 शब्दों के असर के दो पहलू

12 ज्ञानी विथ यूथ

14 दादाश्री के पुस्तक की झलक

16 राजा ने रोल्स रोयस गाड़ी का उपयोग कूड़ा ले जाने के लिए क्यों किया?

18 भगवान महावीर

21 पज़ल

22 पाँचवी कलम

23 Summer Camp 2018

संपादक : डिम्पल मेहता
वर्ष : 5, अंक : 12
अखंड क्रमांक : 60
अप्रैल 2018

संपर्क सूत्र :
ज्ञानी की छाया में,
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला : गांधीनगर-382421, गुजरात
फोन : (079) 39830100
email: akramyouth@dadabhagwan.org
website: youth.dadabhagwan.org

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist- Gandhinagar

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist- Gandhinagar

Printed at
Amba Offset
B-99, K6 Road, Electronics GIDC,
Sector 25, Gandhinagar - 382044,
Gujarat, India

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist- Gandhinagar

कुल 24 पेज कवर पेज सहित

सदस्यता शुल्क
वार्षिक
भारत : 125 रुपए
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 10 पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : 500 रुपए
यू.एस.ए. : 60 डॉलर
यू.के. : 40 पाउन्ड

D.D/M.O. महाविदेह फाउन्डेशन के नाम पर भेजें।

संपादकीय

हम कैसा बोलते हैं? कितने शब्द बोलते हैं? हमारे बोलने की शैली कैसी है? हमारे व्यक्तित्व में वाणी की महत्वपूर्ण भूमिका है। सुबह से लेकर रात तक हर एक का वाणी का व्यवहार अविरत चलता ही रहता है।

मनुष्य जीवन में वाणी की शुरुआत हुए लगभग पंद्रह हज़ार वर्ष हो चुके हैं! शब्दों से तो हम पूरे जगत् को जीत सकते हैं और शब्दों से ही हम दोस्त को दुश्मन और दुश्मन को दोस्त बना सकते हैं। अगर जीवन में सफलता प्राप्त करनी हो, तो इस बात का ध्यान रखना ज़रूरी है कि हम जो कुछ भी बोलते हैं, उस पर से दुनिया हमें देखती है। हम जो कर्म करते हैं, उस पर से दुनिया हमें जाँचती है।

वाणी का व्यवहार दो तरह से परिणमित होता है। कड़वा या मीठा। मीठा तो खुशी-खुशी गले से उतर जाता है, लेकिन कड़वा नहीं उतरता। कड़वा-मीठा दोनों में समभाव रहे, दोनों एक ही समान उतर जाएँ, उसकी समझ ज्ञानी देते हैं! परम पूज्य दादाश्री ने वाणी के सिद्धांतों से संबंधित इस काल के सारे स्पष्टीकरण दिए हैं, जिन्हें विस्तारपूर्वक हम इस अंक में समझेंगे।

- डिम्पल मेहता

संत कबीर

विश्व के सर्वश्रेष्ठ कवियों में जिनकी गणना होती है, ऐसे पंद्रहवीं सदी के फिलॉसोफर सूफी संत कबीर भारत के आध्यात्मिक आकाश के चमकते हुए सितारे हैं। उनके दोहों में, दो छोटे से वाक्यों में बहुत गहरा तत्वज्ञान और प्रेरणात्मक संदेश मिलता है। उदाहरण के तौर पर इन दोहों को देखेंगे।

मीठा सब से बोलिए, सुख उपजे चहू ओर
वशीकरण यह मंत्र है तजिए वचन कठोर

कबीर साहब कहते हैं कि सब के साथ प्रेम से और मीठा बोलो। इससे चारों ओर का वातावरण सुखमय बन जाएगा। कठोर वाणी का त्याग करके प्रेम से सब को जीत लो। सामने वाले को वश में रखने का मंत्र मीठी वाणी है।

ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय
औरन को शीतल करे, आप ही शीतल होय

ऐसी वाणी नहीं होनी चाहिए जिसमें अहंकार हो। जो लोग सामने वाले को मधुर वाणी से आनंद देते हैं, उन्हें भी ठीक वैसी ही शांति और आनंद की प्राप्ति होती है।

शब्द बराबर धन नहीं, जो कोई जाने बोल
हीरा तो दामें मिले, शब्द का मोल न तोल

कबीर साहब अपने दोहे में कहते हैं कि शब्द जैसा कोई धन नहीं है लेकिन यह बात सिर्फ वे ही लोग समझ सकते हैं, जिन्हें शब्दों और वचनों की कीमत समझ में आयी हो। धन से हीरे मिल सकते हैं लेकिन शब्दों की कोई कीमत नहीं है। वे अमूल्य हैं।

कागा किसका धन हरा, कोयल किसको देत
मीठा शब्द सुनाय के जग अपना कर लेत।

शब्द ही इंसान को जोड़ते भी हैं और तोड़ते भी हैं। एक ही कटु वचन संबंधों को तोड़ देता है। कठोर वचनों को कभी नहीं भूल सकते। कौए और कोयल के रूप-रंग में कुछ फर्क नहीं है। फर्क सिर्फ इतना ही है कि कौए की वाणी कठोर है और कोयल की वाणी मीठी है। मधुर आवाज़ के कारण कोयल प्रिय बन गई है। उसकी आवाज़ सुनना अच्छा लगता है। यदि आपके शब्दों में मिठास और वाणी में मधुरता है, तो यह जगत् आपका है।

शब्दों के असर के पीछे का विज्ञान

किसी के हृदय को ठेस पहुँचाने के लिए हथियारों की ज़रूरत नहीं है, बल्कि उसके लिए तो शब्द ही काफी हैं। यही सत्य है।

एम.डी. (डॉक्टर ऑफ मेडिसिन) का पद प्राप्त किए हुए - एन्ड्रू न्यूबर्ग और मार्क रोबर्ट वोल्डमेन के मतानुसार, शब्द वास्तव में आपके दिमाग़ को बदल सकते हैं।

उन्होंने अपनी किताब "शब्द आपके दिमाग़ को बदल सकते हैं" उसमें कहा है कि "एक ही शब्द में इतनी शक्ति है कि जो शारीरिक और भावनात्मक दबाव को नियंत्रित करने वाले जिन्स की अभिव्यक्ति पर प्रभाव डालता है।"

सिर्फ एक ही नकारात्मक शब्द आपके दिमाग़ में रहने वाले भय के केन्द्र की प्रवृत्ति को बढ़ा सकता है। वह दर्जनों दबाव डालने वाले हार्मोन्स और संदेशवाहक दिमाग़तंतु छोड़ता है जो कि हमारे दिमाग़ को नियोजित करने के कार्य में बाधा डालते हैं। (खासतौर पर तर्कशास्त्र, विवेकबुद्धि और वाणी के संदर्भ में यह बात सही है।) न्यूबर्ग और वोल्डमेन ऐसा लिखते हैं कि "कठोर शब्द दिमाग़ में से ऐसे चेतावनी देने वाले संदेश भेजते हैं जो कि कान के आगे वाले हिस्से में रहने वाले तर्कशास्त्र और विवेकबुद्धि के केन्द्रों को कुछ अंश तक बंद कर देते हैं।" आप अपने दिमाग़ में एक सकारात्मक और आशावादी शब्द को पकड़कर अपने कान के आगे वाले हिस्से की प्रवृत्ति को सतेज कर सकते हैं। अपनी व्यक्तिगत शक्तियों को बढ़ाने और ज़िंदगी को सुधारने के लिए अत्यंत शक्तिशाली औज़ारों के समान शब्दों का उपयोग कर सकते हैं। इसके बावजूद कई बार हम बोलते समय, पढ़ते समय या अपने विचारों को व्यक्त करते समय शब्दों के प्रति सजाग नहीं रहते। हाँ, दूसरों के शब्द भी हमारे व्यक्तिगत स्पंदनों पर असर डालते हैं। कोई शिकायत कर्ता जिसमें सभी प्रकार की नकारात्मक वृत्तियाँ हैं, उसके साथ कुछ समय रहने पर ऐसा लगेगा कि आपकी सारी शक्तियाँ क्षीण हो गई है। शब्दों में बहुत ताकत है इसलिए शब्दों और दोस्तों का चुनाव बहुत समझदारी से करो।

जापान के वैज्ञानिक मसरु इमोटो ने पानी पर एक प्रयोग किया। किसलिए? क्योंकि खुली हवा की तुलना में पानी में ध्वनि के स्पंदन चार गुना तेज़ी से चलते हैं। हमारे शरीर में ७० प्रतिशत से भी ज्यादा पानी है। इस हकीकत के बारे में सोचे तो आपके समझ में आ जाएगा कि नकारात्मक शब्दों के स्पंदन कितनी गति से हमारे कोषों में प्रतिध्वनि उत्पन्न करते हैं। अपने प्राचीन ग्रंथों के अनुसार जीवन और मृत्यु हमारे शब्दों पर निर्भर हैं। यह सिर्फ कहने के लिए नहीं है बल्कि इसमें तथ्य भी है।

हमारे पास दुनिया बदलने की ताकत है और ज़िंदगी में ऊर्जावान बनने के लिए अनेक उपायों में से सब से तेज़ उपाय है, शब्दों का उपयोग सावधानीपूर्वक करना।

नाम - आयुष मेहता

उम्र - १८

पिछले साल की ही बात है कि जब फाइनल प्रोजेक्ट के प्रेज़न्टेशन के लिए सभी विद्यार्थी फॉर्मल ड्रेस में कॉलेज पहुँच गए थे। ठीक दस बजे प्रेज़न्टेशन शुरू हो गया। एक के बाद एक सभी ग्रुप अपना प्रेज़न्टेशन कर रहे थे और कुछ ही देर में हमारे ग्रुप की बारी आ गई। प्रेज़न्टेशन के लिए हम लेपटोप, वगैरह सेट करने लगे। सभी लोग नर्वस थे लेकिन सब कुछ अच्छी तरह से सेट हो गया। तभी सिद्धार्थ ने मुझे प्रेज़न्टेशन वाला पेन ड्राइव देने को कहा। जब मैंने पेन्ट के जेब में हाथ डाला तो पेन ड्राइव नहीं थी। मैंने दूसरी जेब में भी देखा। शर्ट की जेब भी देख ली, बेग में भी देखा लेकिन कहीं नहीं मिला। पेन ड्राइव न मिलने पर सिद्धार्थ ने नाराज़ होकर मुझ से कहने लगा, "आयुष तुझे इतना छोटा सा काम दिया, उसे भी तू ठीक से कर नहीं पाया। तेरा ध्यान कहाँ रहता है, मंदबुद्धि?" आसपास वाले सब लोग मेरी ओर देखने लगे। गलती तो मुझ से हुई थी। इस प्रेज़न्टेशन के लिए मैंने बहुत मेहनत की थी। मैंने घर पर फोन करके मम्मी से पेन ड्राइव ढूँढने के लिए कहा, तभी मेरे स्टडी टेबल पर से पेन ड्राइव मिल गया। टीचर से कहकर हमारा प्रेज़न्टेशन थोड़ी देर बाद करवाया और मैं घर जाकर पेन ड्राइव ले आया। हमारी बारी आने पर जैसे ही हम स्टेज पर पहुँचे, तभी पीछे से कुछ लड़के "मंदबुद्धि... मंदबुद्धि" कहकर मेरा मज़ाक उड़ाने लगे। गुस्से को काबू में रखकर मैंने प्रेज़न्टेशन तो दिया लेकिन "मंदबुद्धि" शब्द कई दिनों तक मेरे कानों में गूंजता रहा। और इस डर से कि दुबारा कोई मेरी मज़ाक उड़ाएगा, मैंने सिद्धार्थ के साथ दोस्ती छोड़ने का और कॉलेज़ भी छोड़ देने का तय कर लिया था। तभी एक दिन सुबह मेरे मोबाइल की एप, ए-कनेक्ट में टुडेज़ एनझाइज़र का नोटिफिकेशन आया। उस पर क्लिक करते ही तीन मिनट का एक विडियो आया।

प्रश्नकर्ता : *जय सच्चिदानंद। पूज्यश्री, कोई मेरी मज़ाक उड़ा रहा हो और सामने वाले को ऐसा लगे कि मुझे दुःख नहीं हो रहा है लेकिन मुझे अंदर दुःख हो रहा हो तो सामने वाले के साथ मुझे कैसा व्यवहार करना चाहिए? और उस मज़ाक का मुझ पर असर न हो, इसके लिए मुझे क्या करना चाहिए?*

पूज्यश्री : *असर ही न हो, ऐसे बन जाना है, यदि कोई कहे कि तू ऐसा है तो कहना है, "हाँ भाई मैं पहले से ही ऐसा हूँ।" बेअक्ल कहे तो कहना, मुझ में पहले से ही कम है, तूझे आज पता चला इस प्रकार से हँसी में उड़ा देना है। उस मज़ाक के असर में नहीं रहना है और अगर असर हो जाए तो सामने वाला और ज्यादा मज़ाक उड़ाएगा उससे हमें और भी ज्यादा असर हो जाएगा। इसके बजाय हँसी-मज़ाक करके या ठीक है, और क्या कहना है, चलो, कहेंगे तो इस तरह से धीरे-धीरे बात खत्म हो जाएगी और उसके बाद उसका असर भी नहीं होने देना है। इन लोगों में तो अज्ञान है, अर्थात् क्या? बुद्धि, अहंकार... यानी कि जब इंसान किसी को परेशान करे या दखलंदाज़ी करे, तभी उसे मज़ा आता है। खुद को चैन नहीं है, शांति नहीं है इसलिए जब वह दूसरों को परेशान करता है, मज़ाक उड़ाता है, दुःख देता है, तब उसे सुख मिलता है। यानी कि हम जितना ज्यादा दुःखी होंगे उसे दुःख देने में उतना ज्यादा मज़ा आएगा। यदि हम दुःखी ही नहीं होंगे तो वह क्या कर लेगा? जैसेकि अगर कोई हमें रस्सी से खींच रहा हो और दूसरी ओर हम से खींचें ही नहीं तो फिर उसे खींचने में क्या मज़ा आएगा? यदि हमने दूसरी ओर से ढील दे रखी हो तो फिर उसे मज़ा ही नहीं आता। हम पकड़कर रखते हैं इसलिए उसे मज़ा आता है कि अब और खींचूँगा। हमें उसका असर ही नहीं होने देना है।*

मुझे ऐसा लगा कि यह वीडियो मेरे लिए ही आया है। कॉलेज और दोस्ती छोड़ने के बजाय मैंने पूज्यश्री के कहे अनुसार तय किया और उसमें सफल रहा।

शब्दों के असर के दो पहलूँ

शब्दों का पॉज़िटिव असर

अथवा

शब्दों का नेगेटिव असर

इस बार तेरा रिज़ल्ट क्यों ऐसा आया?

मुझे लगता है कि यह सब मोबाइल के कारण है। सारा दिन मोबाइल में ही समय बर्बाद करता है।

शब्दों का पॉज़िटिव असर

सॉरी मम्मी-पापा, अब से मैं ध्यान रखूँगा। आपकी बात सही है।

शब्दों का नेगेटिव असर

ओके, तो मोबाइल बंद, खाना बंद, पानी पीना बंद, स्कूल जाना भी बंद, सब कुछ बंद.....

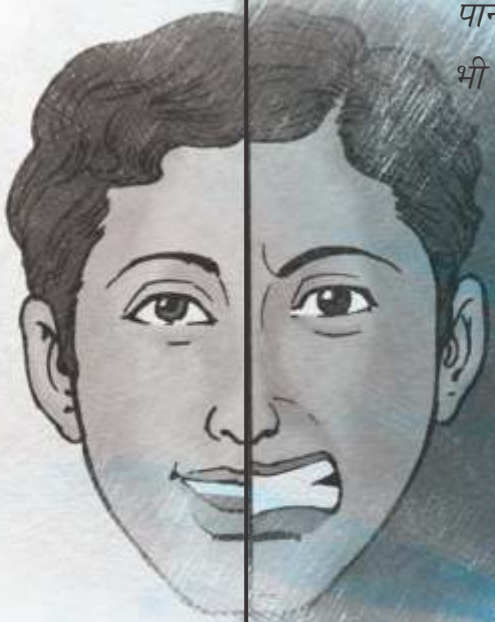

ज्ञानी विथ यूथ

प्रश्नकर्ता : बोले गए शब्दों का असर अर्थात् क्या? हम कुछ कहें या कोई दूसरा हम से कुछ कहे, तो असर हो जाता है या कुछ लोग मोटिवेशनल स्पीच दें, तो हम उसके असर में आ जाते हैं, कुछ लोग नेगेटिव बोलें तो उसका असर हो जाता है। यानी "असर अर्थात् क्या?" और "कैसे हो जाता है?"

पूज्यश्री : आपकी सहेली कहे कि कृष्णा तो ऐसी है और वैसी है, तब हम देखते हैं न कि कौन बोल रहा है, देखते हैं न? जब देखते हैं तब आवाज़ से पता चलता है कि मेरी सहेली ऐसा कह रही है, मेरे बारे में कह रही है। और वह हमें देखते हुए बात कर रही हो तो हमें लगता कि वह हमारी ही बात कर रही है। यानी बुद्धि रिसीव करती है। बुद्धि पकड़ लेती है न इसलिए उसे असर हो जाता है कि मेरा अपमान किया, मेरे बारे में नेगेटिव कहा, मेरी निंदा की, मेरे लिए गलत कहा और अगर अच्छा कहा हो तो गुदगुदी होती है। मैं तो पहले से ही अच्छी हूँ न! मुझे अच्छा कह रही है, मेरी प्रशंसा कर रही है, अर्थात् पहले बुद्धि पकड़ लेती है और फिर अहंकार भुगत लेता है। नेगेटिव हो, गलत शब्द कहे हों तो फिर मन में और चित्त में भोगवटा (असर) शुरू हो जाता है। मन दिखाता रहता है कि यह तो ऐसी ही है, खुद का ठिकाना नहीं है और मेरे बारे में गलत कह रही है। वह तो ऐसी है और वैसी है। बुद्धि जब पकड़ लेती है तब तूफान मचा देती है। यानी बोले गए शब्द, जैसेकि किसी ने यों ही पत्थर फेंका और वास्तव में तो इसके आसपास गिर गया हो तो भी कहेगा, तूने मुझ पर पत्थर फेंका? सिर्फ मानता ही है न। उसने खेल-खेल में यों ही फेंक दिया हो और उसके आसपास गिरा हो तो भी कहेगा मुझ पर फेंका, मैं भी तूझे मारूँगा।

ऐसे ही ये शब्द भी हवा में कहे जाते हैं। मेरे बारे में कहा, मुझे कहता है, वह बुद्धि खुद रिसीव कर लेती है और फिर उसके असर में आ जाती है। गलत कहे हों तो दुःख का असर होता है और अच्छे कहे हों तो मिठास का असर होता है। अब इससे भी आगे का साइन्स यह है कि हमारे ही कॉज़ेज़ के असर देने के लिए ये शब्द कहे जाते हैं। इसलिए हमें समझ लेना चाहिए कि वह गलत कह रहा है, तो मेरे कर्म के उदय के कारण कह रहा है, उसमें उसका दोष नहीं है। अपमान करे तो मैंने भेजा होगा वही वापस आया। मैंने अच्छा किया होगा तो अच्छा आएगा, बुरा किया होगा तो बुरा आएगा। समाधान के लिए अपने पास कोई चाबी होनी चाहिए वर्ना गलत असर होता रहता है।

और अगर ज्ञान हो, प्रज्ञा हाज़िर हो, मुझ से अगर कोई कहे कि आपने ऐसा किया तो मैं भी दीपक से कहूँगा कि ले "दीपक, तेरे बखेड़े पता चल गए, तेरे घपले (घोटाले) पता चल गए, देख तूने गलतियाँ की है, अब धो ले। उसे हमारी तरफ से क्यों बूरा लगा? इसलिए हमारी ही गलती है।" इस तरह से मैं अंदर दीपक को अलग ही रहूँगा। तो फिर मुझे असर नहीं होगा। बुद्धि हाज़िर न रहे और प्रज्ञाशक्ति हाज़िर रहे, तो असर नहीं होगा और बिना भोगवटा के सॉल्यूशन आएगा।

दादाश्री के पुस्तक की झलक

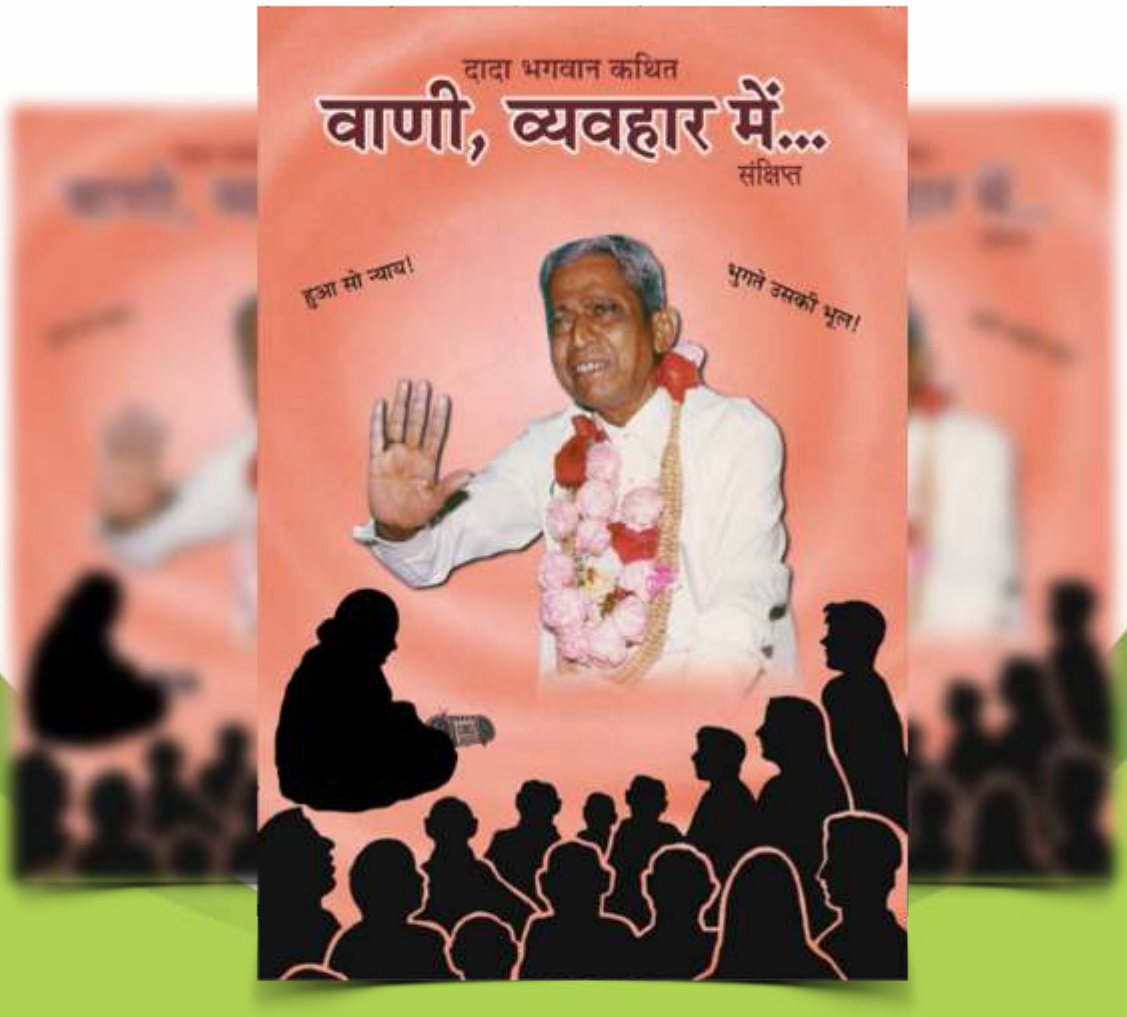

वचनबल ज्ञानी का!

प्रश्नकर्ता : वचनबल कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

दादाश्री : लोग मुझ से पूछते हैं कि "आप में वचनबल क्यों है और हम में वचनबल क्यों नहीं है।" पूछे या न पूछे फिर भी आप्तसूत्र में जवाब लिखा है, पढ़िए।

प्रश्नकर्ता : "जब मज़ाक करने के लिए एक भी शब्द का प्रयोग न किया हो, स्वार्थ के लिए या किसी से कुछ

लेने के लिए एक भी शब्द का प्रयोग न किया हो, वाणी का दुरुपयोग न किया हो। अपना मान बढ़ाने के लिए वाणी न बोले हों, तब ऐसे वचनबल की सिद्धि प्राप्त होती है।"

(आप्तसूत्र)

दादाश्री : यह जवाब आपकी समझ में आता है। जवाब ठीक है न? इस प्रकार करने से खुद को फायदा नहीं होगा। भले ही अज्ञानदशा में हों, लेकिन इस प्रकार से करने पर वचनबल अवश्य उत्पन्न होगा।

फिर "अपनी सेफसाइड के लिए झूठ बोलें, तो वचनबल कहाँ से रहेगा?

हाँ, अपनी सेफसाइड के लिए झूठ बोलेंगे तो फिर वचनबल कहाँ से उत्पन्न होगा? वचनबल किसे प्राप्त होता हैं? जिसे जगत् संबंधी कोई स्पृहा न हो। फिर भले ही आत्मा प्राप्त न किया हो लेकिन थोड़ा सा वचनबल रहता है। वचनबल कैसे चला गया? वाणी का दुरुपयोग करने से। लोगों को मुसीबत में डाल दिया, लोगों को डाँटा, कुत्तों को डराया, प्रपंच (छल, कपट) किए, इससे वचनबल टूट जाता है। इस कारण वाणी कमज़ोर होती जाती है, वीक होती जाती है। और वीक होती जाती है इसलिए फिर अहंकार से कार्य करना पड़ता है कि जाना ही पड़ेगा, करना ही पड़ेगा। बाकी, यों ही सहज रहकर कार्य नहीं कर पाता।

वचन को सिद्ध तो करना पड़ेगा न? वचनबल के लिए तो वचन के नियमों का पालना करना पड़ेगा न? यह तो झूठ बोलकर, धोखा देकर वाणी को जिसने अस्थिर बना दिया है, उसका कौन मानेगा?

अगर ऐसी वाणी निकले कि जो सामने वाले के हृदय को चोट पहुँचाए तो दूसरे जन्म में वाणी बिल्कुल भी नहीं रहती, दस-पंद्रह सालों तक गूंगा रहता है।

सिर्फ सत्य बोलो और फिर सत्य का आग्रह पकड़कर मत रखो तो वचनबल फिर से उत्पन्न होगा। अगर चीज़ का दुरुपयोग होगा तो उसका वचनबल खत्म हो जाएगा। झूठ बोलकर खुद का बचाव करने से ही तो मन-वाणी सब फ्रेक्चर हो जाते हैं। सत्य बोलने के पीछे भी ज़बरदस्त भावना रहनी चाहिए!

वाणी का गलत उपयोग करने से वचनबल खत्म हो गया। किसी भी प्रकार से वाणी का अपव्यय न करें, वाणी का कोई भी विभाविक स्वरूप न दें, तो वचनबल उत्पन्न होगा।

जितना तेरी समझ में आए उतना सत्य बोलना। नहीं समझ आए तो मत बोलना, उसमें हर्ज नहीं है। तो उतना वचनबल उत्पन्न होगा। " किसी को भी दुःख हो, ऐसा नहीं बोलना है।" ऐसा तय करना है और "दादा" से वचनबल की शक्ति माँगते रहना है, उनसे प्राप्त होगी। हमारा वचनबल और आपकी दृढ़ इच्छा रहनी चाहिए। हमारा वचनबल आपके सारे अंतरायों को दूर कर देगा। आपकी परीक्षा तो होगी, लेकिन पार उतर जाओगे।

राजा ने रोल्स रोयस गाड़ी उठाने के लिए क्यों इस्तेमाल की?

कचरा

दुनिया में सब से प्रसिद्ध और विशेष प्रकार की रोल्स रोयस गाड़ी राजस्थान से भी जुड़ी हुई है। अल्वर के जाने-माने महाराजा इसके खरीददार थे। वे हमेशा एक साथ तीन गाड़ियाँ ही खरीदते थे। एक बार महाराजा जयसिंह सीधी-सादी वेशभूषा में लंदन की बोन्ड स्ट्रीट पर टहल रहे थे। उन्होंने रोल्स रोयस गाड़ी का शो-रुम देखा और अंदर जाकर गाड़ियों की कीमत और उसकी विशेषता के बारे में जानकारी प्राप्त की।

शो-रुम के सेल्समेन ने गरीब भारतीय समझकर उनका अपमान किया और बाहर जाने का रास्ता दिखाया। इस अपमान के बाद महाराजा जयसिंह अपने होटल के रुम पर लौट आए और अपने सेवकों से शो-रुम पर फोन करने के लिए कहा कि अल्वर के महाराजा कुछ गाड़ियाँ खरीदना चाहते हैं। कुछ घंटों बाद महाराजा ठाठ से अपने बादशाही पोशाक में शो-रुम पर वापस आए। उनके स्वागत के लिए शो रुम की फर्श पर लाल रंग की कालीन बिछाई गई और सभी सेल्समेन ने सिर झूकाकर उनका स्वागत किया।

महाराजा ने उसी समय शो-रुम की सारी छः की छः गाड़ियाँ खरीद लीं और डिलिवरी के सारे पैसे चूका दिए। भारत लौटकर उन्होंने म्युनिसिपल डिपार्टमेन्ट को हुकुम दिया कि इन सभी गाड़ियों का उपयोग शहर के कचरे की सफाई और परिवहन के लिए किया जाए। दुनिया की प्रथम श्रेणी की रोल्स रोयस गाड़ियाँ अल्वर शहर के कचरे के परिवहन (लाने ले जाने) के लिए इस्तेमाल होने लगी। यह समाचार पूरी दुनिया में फैल गया। रोल्स रोयस कंपनी की प्रतिष्ठा एक हास्यास्पद बात बन गई। यूरोप या अमरीका में जब भी कोई व्यक्ति रोल्स रोयस गाड़ी के मालिक होने का गर्व करता तो लोग हँसकर पूछते, "कौन सी गाड़ी"? वही न जो भारत के शहरों में कचरा ले जाने में उपयोग की जाती है?"

रोल्स रोयस गाड़ी की कंपनी की प्रतिष्ठा को ज़ोरदार झटका लगा और उनकी बिक्री कम होने के कारण वार्षिक आमदनी बिल्कुल कम हो गई।

रोल्स रोयस कंपनी के मालिकों ने भारत में महाराजा जयसिंह से क्षमा माँगने के लिए तार भेजा और रोल्स रोयस गाड़ियों में कचरा ले जाने की हेरा-फेरी बंद करवाने का निवेदन किया। उसके बाद महाराजा को छः नयी गाड़ियाँ मुफ्त में देने का प्रस्ताव रखा।

जब महाराजा जयसिंह ने देखा कि रोल्स रोयस कंपनी को सबक मिल गया, तब उन्होंने कचरा ले जाने की हेराफेरी के लिए गाड़ियों का इस्तेमाल करना बंद करवा दिया।

इस प्रकार शो रुम के सेल्समेन द्वारा असावधानीपूर्वक बोले गए शब्दों का रोल्स रोयस कंपनी की ख्याति पर बहुत बुरा असर हुआ।

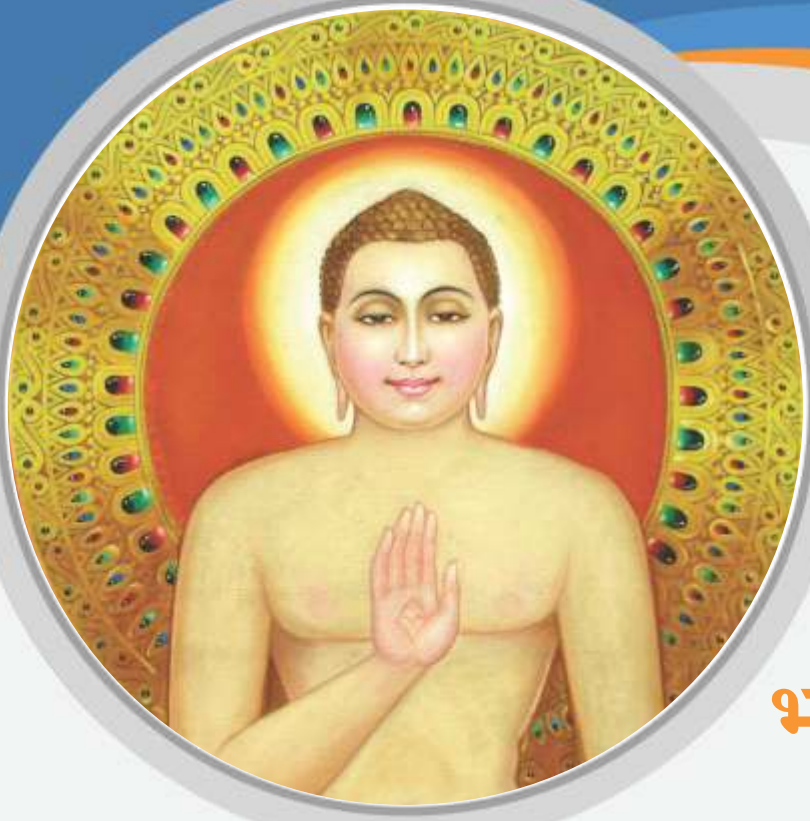

भगवान महावीर

भगवान महावीर के समय में राजगिरी शहर के पास स्थित वैभवगिरी पहाड़ पर एक लोखुर नाम का लुटेरा रहता था। चोरी में निपुण होने के कारण वह कभी भी पकड़ में नहीं आता था। उसका एक रोहिण्य नाम का बेटा था। वह भी पिता की तरह ही चोरी-लूटबाजी करता था और पिता से भी ज्यादा निपुण एवं होशियार था। वह अमीरों को लूटकर गरीबों की मदद करता था इसलिए लोग उसे पकड़वाने में राजा के सैनिकों की सहायता नहीं करते थे।

कुछ समय बाद लोखुर का अंत समय आ गया और उसने रोहिण्य से ऐसा वचन मांगा की वह कभी भी भगवान महावीर का उपदेश नहीं सुनेगा। मृत्यु शैया पर पड़े हुए पिता को रोहिण्य ने वचन दे दिया। पिता की मृत्यु के बाद रोहिण्य की धाक और बढ़ गई और संपन्न लोगों की कीमती चीज़ों की सलामती नहीं रही। उसके जुल्म और चोरी की बातें श्रेणिक राजा तक पहुँच गई और उन्होंने रोहिण्य को पकड़ने की ज़िम्मेदारी सब से बुद्धिमान एवं चतुर मुख्यमंत्री अभय कुमार को सौंप दी।

एक बार रोहिण्य महावीर भगवान के सभामंडप से होकर गुज़र रहा था। उसने अपने कानों को हाथों से बंद कर रखा था ताकि वह भगवान की वाणी सुन न पाए। लेकिन संयोगवश उसके पैर में काँटा चूभ गया और उस काँटे को निकालने के लिए उसे

कानों पर से हाथ हटाने पड़े। जब वह काँटा निकाल रहा था, तब उसके कानों में भगवान की वाणी सुनाई दी, जो इस प्रकार थी।

"मनुष्य योनि, सभी प्रकार की योनियों में उत्तम है, क्योंकि इस योनि में ही मोक्ष मिल सकता है। अच्छे कर्म करके जीव स्वर्ग में जा सकता है। जहाँ सभी प्रकार के सुख एवं भोगविलास मिलते हैं। ये स्वर्गवासी जब चलते हैं तब उनके पैर ज़मीन को स्पर्श नहीं करते, उनकी परछाई नहीं होती, उनकी आँखें स्थिर होती हैं - झपकती नहीं हैं और उनके गले की माला मुरझाती नहीं है।

इस घटना के बाद रोहिण्य किसान का रूप धारण करके शहर में चोरी करने के इरादे से निकला, लेकिन रास्ते में ही अभय कुमार के कुशल सैनिकों ने उसे पकड़ लिया और जेल में डाल दिया। दूसरे दिन उसे राजदरबार में ले जाया गया। दरबार में राजा ने जब उससे पूछा तो उसने कहा कि उसका नाम दुर्गाचंद्र है और शालिग्राम गाँव का किसान है। वह राजधानी राजगिरी में आया था और शालिग्राम वापस लौट रहा था तभी सैनिकों ने उसे बंदी बना लिया। शालिग्राम के लोगों ने इस बात की गवाही दी। किसान के रूप में पकड़े हुए रोहिण्य को लुटेरा साबित करना मुश्किल था।

रोहिण्य का ऐसा कथन सुनने के बाद उसके किए हुए कुकर्म कबूल करवाने का काम वापस अभय कुमार को सौंपा गया। रोहिण्य की शराब पीने की आदत का पता होने से उसे बहुत शराब पिलाई गई, ताकि वह नशे में चूर होकर बेहोश हो जाए। बेहोशी की अवस्था में रोहिण्य को सुगंधीदार उत्तम वस्त्र एवं गहने पहनाकर सब से ऊपर की मंज़िल पर एक विशाल एवं सुशोभित भवन में सुला दिया।

होश में आते ही रोहिण्य ने अपने आसपास भव्य, वैभवशाली और अद्‌भुत वातावरण देखा, तो उसे आश्चर्य हुआ। स्फटिक की दीवारें और छत, फर्श, मखमल के गद्दे वाला चंदन की लकड़ी से बनाया हुआ पलंग, मंद-मंद सुनाई देने वाला मधुर संगीत, अप्सरा जैसी नृत्यांगनाओं का रुचिकर नृत्य, गायन-वादन की तैयारी करते हुए गंधर्व वगैरह को देखकर उसे लगा कि वह स्वर्ग में ही है। आश्चर्यचकित रोहिण्य ने अपनी सेवा में उपस्थित एक युवती से पूछा कि "यह कौन सी जगह है?" युवती ने कहा कि "आप इस स्वर्गलोक के नए राजा हो और यह दैवीय वैभव आपके भोगविलास के लिए है।"

"मेरे जैसे लूटेरे को स्वर्ग के सुख मिल सकते हैं क्या?" वह सोचने लगा। उसे याद आया कि वह गरीबों और ज़रूरतमंदों की मदद करता था इसलिए ऐसा हुआ होगा। उसे भगवान के न्याय पर श्रद्धा बैठ गई, लेकिन फिर भी मन में शंका थी कि "यह अभय कुमार की कोई योजना तो नहीं होगी न?" उसके आसपास का वातावरण इतना आह्लादक और वास्तविक था कि किसी तारण पर आना संभव नहीं था इसलिए उसने तय किया कि क्या हो रहा है, देखता हूँ।

कुछ समय बाद कीमती पोशाक और आभूषणों से सुसज्ज एक दैवीय पुरुष ने प्रवेश किया। उसके हाथ में एक सोने की छड़ी थी और एक बहीखाता था। "आपके नए राजा जाग गए?" उसने एक सेविका से पूछा। सेविका ने कहा कि अभी ही जागे हैं और संगीत समारोह के लिए तैयार हो रहे हैं। "संगीत समारोह शुरू होने से पहले मैं देख लूँ कि उनके आगमन की सारी तैयारियाँ ठीक तरह से की गई हैं या नहीं। और उनसे स्वर्गलोक की कुछ ज़रूरी जानकारी भी ले लूँ। ऐसा बोलते हुए वे रोहिण्य के पास गए और अपना बहीखाता खोलकर उन्होंने रोहिण्य से कहा कि ये स्वर्ग के सुख मिलने

से पहले पूर्वजन्म में कैसे पुण्यकर्म किए थे बताइए।

इसी दौरान रोहिण्य को स्वर्ग के देव-देवियों के बारे में भगवान महावीर की वह देशना जो उसने सुनी थी, वह याद आ गई। उसने देखा कि उसके आसपास के लोगों के पैर ज़मीन पर हैं, उनके शरीर की परछाईयाँ भी पड़ रही हैं। और वे मनुष्यों की तरह आँखें भी झपका रहे हैं। तुरंत ही वह समझ गया कि यह सच्चा स्वर्ग नहीं है बल्कि खुद ने की हुई चोरी के सबूत प्राप्त करने के लिए अभय कुमार द्वारा रचा गया यह मायाजाल है। ऐसा समझ आने के बाद उसने जवाब दिया कि पूर्वजन्म में उसने योग्य कार्यों के लिए दान दिया था, मंदिर बनवाए थे, तीर्थस्थलों की यात्रा की थी और उपयुक्त एवं ज़रूरतमंदों की मदद की थी। उसके कथन को नोट करके देव ने उसे पिछले जन्म में गलत काम करके मज़ा लिया हो। ऐसे कार्यों के बारे में बताने के लिए कहा। रोहिण्य ने चतुराई से जवाब दिया कि स्वेच्छा से, समझदारी से गलत कामों से दूर रहा, इसीलिए उसे स्वर्ग में स्थान मिला है। रोहिण्य के ऐसे जवाब से अभय कुमार की योजना निष्फल हो गई और उसे एक निर्दोष किसान मानकर (जिसका उसने दावा किया था) छोड़ दिया गया।

छूटने के बाद रोहिण्य को लगा कि अचानक ही भगवान महावीर की वाणी सुनने से वह बच गया, तो फिर भगवान की वाणी नहीं सुनने की पिता की सलाह कैसे योग्य हो सकती है? "अचानक ही सुनी हुई वाणी इतनी उपयोगी सिद्ध हुई तो कल्पना करो कि उनके उपदेश से कितना फायदा होता होगा?" उसने अपने आप से पूछा, "क्या इतने साल भगवान की वाणी नहीं सुनकर उसने इतने साल व्यर्थ गँवा दिए? " बहुत सोचने के बाद उसने तय किया कि भगवान महावीर के पास जा कर, उनका शरण प्राप्त करके, उनके चरणों में सेवा करूँगा। वह भगवान के पास गया और उनसे नम्र निवेदन किया कि वे शिष्य की तरह उसे स्वीकार करें और उसे दीक्षा ग्रहण करने की रजामंदी दें। भगवान ने कहा कि दीक्षा ग्रहण करने से पहले वह राजा के पास जाकर, अपनी सही पहचान बताकर, अपने सारे पापों को कबूल कर लें।

राजदरबार में जाकर रोहिण्य ने सब के सामने राजा को अपनी सही पहचान बताकर खुद ने की हुई चोरियों को कबूल किया, सज़ा भोगने को तैयार हो गया। अभय कुमार से लूट का माल वापस ले लेने का निवेदन किया। रोहिण्य का पश्चाताप और वैराग्य देखकर राजा ने उसे माफ करके साधु बनने की अनुमति दी।

भूतकाल में किए गए पापकर्मों को धोने के लिए रोहिण्य ने हृदयपूर्वक बहुत पश्चाताप किया और कठोर तप किया। वृद्धावस्था में भगवान महावीर की आज्ञा लेकर संथारा व्रत (मृत्युपर्यंत अन्न-जल का त्याग करके, ध्यान करना।) किया और देहविलय के बाद स्वर्ग में गया।

दोस्तों, यहाँ हमने देखा कि भगवान महावीर के शब्दों का असर कैसा हुआ कि एक लूटेरा भी स्वर्ग में जा सका।

पज़ल

पहली सुलझाकर जानो कि दादाश्री क्या कहना चाहते हैं

1. दवास्याद्			5					
2. रकठो	4		20					
3. णीवानो तसिद्धां		6						
4. हंरकाअ	17		19					
5. ळीअव								
6. नपमाअ			15					
7. धनासा	1							
8. धराविना				21				
9. किसतम			12					
10. र्णत्कीवकोटंत्						14		
11. पास्वन्न			16					
12. कोरट	8							
13. फियसाकन्टि		23						
14. जियकसालोलको					3			
15. विन्सएड	7							
16. यकन्शिलरमसस्टे							23	
17. तिहया	2							
18. शुत्तद्धिचि	13							
19. मापालेनय	9							
20. लाजहोजाली		22						
21. फीमा	11							

									जे	ं
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11

ं						हं					!
12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23

जवाब - साहजिक वाणी अर्थात् जिसमें किंचित्मात्र अहंकार न हो! (आप्तसूत्र ५४५)

5 पाँचवीं कलम

"वाणी को कैसे सुधारें? कठोर (दुःखदायी) शब्दों को कैसे रोक सकते हैं?" परम पूज्य दादाश्री ने वाणी कैसी होनी चाहिए, उसका उल्लेख अपनी नौं कलमों की पाँचवी कलम में किया है।

तो चलो, इस कलम द्वारा दादाश्री क्या कहना चाहते हैं, उसे जानेंगे...

"हे दादा भगवान मुझे किसी भी देहधारी जीवात्मा के साथ कभी भी कठोर भाषा, तंतीली भाषा न बोली जाए, न बुलवाई जाए या बोलने के प्रति अनुमोदना न की जाए, ऐसी परम शक्ति दीजिए। कोई कठोर भाषा, तंतीली भाषा बोले तो मुझे, मृदु-ऋजु भाषा बोलने की शक्ति दीजिए।"

दादाश्री : *कठोर भाषा नहीं बोलनी चाहिए। यदि किसी के साथ बोलते समय कठोर भाषा निकल गई और उसे बुरा लगा तो हमें उसके पास जाकर कहना चाहिए कि भैया, मुझ से भूल हो गई, माफी माँगता हूँ। और यदि सामने नहीं कह पाए ऐसा हो तो फिर पछतावा करना कि ऐसा नहीं बोलना चाहिए।*

प्रश्नकर्ता : *और फिर हमें सोचना चाहिए कि ऐसा नहीं बोलना है।*

दादाश्री : *हाँ, ऐसा सोचना चाहिए और पछतावा करना चाहिए। पछतावा करें तो ही वह बंद होता है वर्ना यों ही बंद नहीं होता। सिर्फ बोलने से बंद नहीं होता।*

प्रश्नकर्ता : *मृदु-ऋजु भाषा यानी क्या?*

दादाश्री : *ऋजु यानी सरल और मृदु यानी नम्रतापूर्ण। अत्यंत नम्रतापूर्ण हो तब मृदु कहलाती है। अर्थात् सरल और नम्रतापूर्ण भाषा हम बोलें और ऐसी शक्ति माँगे, तो ऐसा करते-करते वह शक्ति आएगी। आप कठोर भाषा बोलें और बेटे को बुरा लगा तो उसका पछतावा करना। और बेटे से भी कहना कि, "मैं माफी माँगता हूँ। अब फिर से ऐसा नहीं बोलूँगा।" यही वाणी सुधारने का रास्ता है और "यह" एक ही कॉलेज़ है।*

प्रश्नकर्ता : *कठोर भाषा, तंतीली भाषा तथा मृदुता-ऋजुता, इनमें क्या भेद है?*

दादाश्री : *कई लोग भाषा बोलते हैं न कि, "तू नालायक है, बदमाश है, चोर है।" जो शब्द हमने सुने नहीं हो, ऐसे कठोर वचन सुनते ही हमारा हृदय स्तंभित हो जाता है। कठोर भाषा ज़रा भी प्रिय नहीं लगती। उल्टे मन में प्रश्न उठता है कि यब सब क्या है? कठोर भाषा अहंकारी होती है। और तंतीली भाषा यानी क्या? स्पर्धा में जैसे तंत होता है न? "देखो, मैंने कैसा बढ़िया खाना पकाया और उसे तो पकाना ही नहीं आता!" ऐसे तंत हो जाता है, स्पर्धा में आ जाता है। वह तंतीली भाषा (सुनने में) बहुत बुरी होती है। कठोर और तंतीली भाषा नहीं बोलनी चाहिए। भाषा के सारे दोष इन दो शब्दों में समा जाते हैं। इसलिए फुरसत के समय में "दादा भगवान" से हम शक्ति माँगते रहें। कर्कश बोला जाता हो तो उसकी प्रतिपक्षी शक्ति माँगना कि मुझे शुद्ध वाणी बोलने की शक्ति दो, स्याद्वाद वाणी बोलने की शक्ति दो, मृदु-ऋजु भाषा बोलने की शक्ति दो, ऐसा माँगते रहना। स्याद्वाद वाणी यानी किसी को दुःख नहीं हो ऐसी वाणी।*

दादाश्री के द्वारा दी गई नौ कलमें* WWW.dadaghagwan.org *पर सविस्तार जान सकेंगे।

Dada Bhagwan Parivar

2018 Summer CAMPS for youth

Place	Boys	Contact	Group B	Contact
Simandar City	25-26 April	079-39830939		
Surat	5-6 May	9898689697	30 April,1 May	9601291024
Surat-rander				
Baroda	5-6 May	9033514749	30 April,1 May	9624852602
Surendranagar	06-may	9998177813	30-apr	9726108434
Bharuch	06-may	9974299193	4-5 May	9427105443
Bhuj	06-may	9925991600	3-4 May	9427171976
Gandhidham	06-may	9726202570		
Rajkot	5-6 May	9825317607	3-4 May	7623844316
Thoraji				
Jetpur			24-25 April	9173674404
Morbi				
Jamnagar	06-may	9428315109		
Bhavnagar	06-may	9924344425	28-apr	9924344425
Mehasena	06-may	9879112894		
Anand	16-17 June	9924110170		
Ankaleshawer	16-17 June	9054030470		
Mumbai	2-3-4 May	9819758355		
Veraval	06-may	9033068964	10-jun	9638904820
Godhera	06-may	9979109529		
Junagad	06-may	9726754571		
Ahmedabad	5-6 May	9327072945	28-29 April	9825047038
Group E-yuva Girls 17-21 Years				
Simandhar City	6-7-8 May	079-39830939		

For more information
http://kids.dadabhagwan.org
http://youth.dadabhagwan.org

Note: (1) It is necessary to register at your nearest center to participate in Summer Camp. Registration charge will be nonrefundable. 2) According to the schedule for determining the dates of the registration for the youth and according to the standard for the registration will be done. Registration will be done 5 days before the date of the summer camp. Then there will be an immediate charge for registration. 3) Registrations for boundary city summer camps can be done at Trimandir Sakul's 'store of happiness' from 9:30 am to 12 pm in the morning, from 4 to 7 pm in the evening, which can be done till 5 days before the summer camp, this registration will be done from March 20.

अप्रैल 2018
वर्ष : 5, अंक : 12
अखंड क्रमांक : 60
अक्रम यूथ

युVA Junior

A Fun Event

For Spiritual development of youth

for Junior youth boys (13-16yrs)

Fees Only 1600/-

9 to 13 May

Notes : All Participants need to arrange accommodation and Regular Meal coupon by themselves. During Picnic we will provide food.

Venue: Simcity Adalaj

Registration: youth.dadabhagwan.org

अपने प्रतिभाव और सुझाव akramyouth@dadabhagwan.org पर भेजें।
मालिक - महाविदेह फाउन्डेशन की तरफ से प्रकाशितमुद्रक और संपादक - श्री डिम्पल मेहता
अंबा ऑफसेट - पार्श्वनाथ चेम्बर्स, उस्मानपुरा, अहमदाबाद विभाग 14 से प्रकाशित की गई है।

Dada's Youth Network